

चक्कमक

अगस्त 2009
मूल्य 20

लेकिन अगर ईश्वर पेड़ और फूल है

लेकिन अगर ईश्वर पेड़ और फूल है
और पहाड़ और चाँदनी और सूरज
मैं उसे ईश्वर क्यों कहता हूँ ?
मैं उसे फूल और पेड़ और पहाड़ और चाँदनी कहूँ
क्योंकि अगर, सिर्फ इसलिए कि मैं उसे देख सकूँ
वह अपने आप को सूरज और चाँदनी
और फूलों और पहाड़ों में बदल देता है,
अगर वह मुझे पहाड़ों और पेड़ों की तरह दिखता है
और चाँदनी और सूरज और फूलों की तरह,
तो यही उसकी मर्ज़ी होगी कि मैं उसे जानूँ
पेड़ों और फूलों और चाँदनी और सूरज की तरह।

(पुर्तगाली कवि फेर्नादो पेस्सोआ की इस कविता का अनुवाद
कवि तेजी ग़ोवर ने किया है।)